दिनांक 27 जनवरी, 1986

सं. श्रो.चि./3932. — बूंकि हरियाणा के राज्यपाल की साय है कि मैं० (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा रोडवेज रोहतक, के श्रीमक श्री श्रोम प्रकाश तथा उसके प्रवन्धकों के बीव इसुमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोह्योगिक विवाद हैं;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हैंतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

् इसलिए, अब, औद्यौगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संख्या 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गुठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित गीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—"

क्या श्री ग्रोम प्रकाश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, ती वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो॰वि॰/पानी/119-85/3990--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मार्केट कमेटी करनाल के श्रमिक श्री श्रमर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिएं, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधुनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

्क्या श्री ग्रमर सिंह की क्षेत्राप्रों का समापन न्यागीवित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? ॰ ॰

सं ग्रो वि ्रीहिड्/78-85/3996.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि जनरल मनेजर मिल्क प्लांट, जीन्द के श्रमिक श्री सतपाल तथा उसके प्रवन्धकों क मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

्रं भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट] करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचनाईसं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उन्त प्रविनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मान ना न्यायी गंग एवं पंचार तीन मास में देते हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सत्त्राल की सेवाग्रों का समापन न्याधीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? संब ग्रोब विविश्रोहतक / 143/85/4003 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैंब जीवन एग्रीकलचर एण्ड ग्रायरन गुडज प्रोडक्शन को ब्राइस्ट्रीयल सोसायटी लि., बंहादुरगढ़, के श्रमिक श्री राम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामुले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यभील विवाद को न्यायनिर्णय हेतुं निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के उपछ (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तुओं का प्रयोग करते हुए हरियाणा। के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम/78/32573, दिनीं के 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? थदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार